आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2618 • उदयपुर, गुरुवार 24 फरवरी, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

मानसा (पंजाब), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, चयन, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 6 एवं 7 फरवरी, 2022 को जन्डसर गुरुद्वारा बहादुरपुर, बरेटा मानसा (पंजाब) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता बीग हॉफ फाउण्डेशन रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 435, कृत्रिम अंग माप 200, केलीपर माप 41 की सेवा हुई तथा 46 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् रामसिंह जी शेखु (अध्यक्ष), अध्यक्षता श्रीमान् विजय कुमार जी (आत्माराम विद्यालय प्रिंसिपल), विशिष्ट अतिथि श्रीमान् प्रदीप कुमार जी गुप्ता (समाज सेवी), श्रीमान् मनिन्दर कुमार जी (बीग ऑफ फाउण्डेशन), श्रीमान् कुलदीप सिंह जी (सचिव, बीग हॉफ फाउण्डेशन), श्रीमान् चक्रवर्ती जी पाठक, श्रीमान् शंकर कुमार जी, श्रीमान् सुरेश कुमार जी (सदस्य, बीग हॉफ फाउण्डेशन) रहे।

शिविर टीम में डॉ. विजय कार्तिक जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), चित्रा जी (पी.एन.डो) श्री अखिलेश जी अग्निहोत्री (शिविर प्रभारी), श्री मधुसुदन जी शर्मा (आश्रम प्रभारी), सुनिल जी श्रीवास्तव, श्री कपिल जी व्यास (शिविर सहायक), श्री प्रवीण जी यादव (फोटोग्राफर एण्ड विडियोग्राफर) ने भी सेवायें दी।

भिण्ड (मध्यपद्रेश), दिव्यांग जाँच, चयन एवं कृत्रिम अंग माप शिविर

दिव्यांगजनों को समाज की मूलधारा में लाने तथा उन्हें सकलांग बनाने के लिए नारायण सेवा संस्थान जाँच, उपकरण वितरण, कृत्रिम अंग माप व वितरण तथा ऑपरेशन का काम सतत् कर रहा है।

ऐसा ही एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 30 जनवरी 2022 को जिला चिकित्सालय, भिण्ड में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता महिला बाल विकास व सक्षम भिण्ड रहे। इस शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 274, कृत्रिम अंग माप 53, कैलिपर माप 36, की सेवा हुई। तथा 14 का ऑपरेशन के लिये चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्री रामदास जी महाराज (आचार्य महामण्डलेश्वर), अध्यक्षता श्री अटल बिहारी जी टॉक (एडवोकेट), अतिथि श्री अजीत जी मिश्रा (मुख्य चिकित्सा, एवं स्वास्थ्य अधिकारी, भिण्ड), श्री डॉ. अनिल जी गोपल (सिविल सर्जन भिण्ड), श्री हर्षवर्धन जी (सचिव सक्षम), श्री शिवभान सिंह जी (सचिव, महिला बाल विकास भिण्ड), श्री उपेन्द्र जी व्यास (प्रभारी महिला बाल विकास)। कैलीपर्स माप टीम सुश्री नेहा जी अग्निहोत्री (पी.एन.डो.), श्री भगवती जी (टेक्नीशियन), डॉ. गजेन्द्र जी (जांचकर्त्ता) शिविर टीम श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री देवीलाल जी, श्री हरीश जी रावत, (सहायक), श्री अनिल जी पालीवाल (कैमरामेन) ने भी सेवायें दी।

सीधा हुआ सोनू का टेढ़ा पैर

धामपुर (बिजनौर) उत्तरप्रदेश निवासी अब्दुल वाहिद का पुत्र जन्म से ही पोलियोग्रस्त पैदा हुआ। जीवन के 17 वर्षों में उसे पिता ने कई हॉस्पीटल में दिखाया पर कहीं भी पोलियो रोग की दिव्यांगता में राहत नहीं मिली। परेशान परिवार सोनू की तकलीफ देखकर बहुत दुःखी होता था पर जन्मजात बीमारी के आगे वे लाचार थे। एक दिन टेलीविजन पर नारायण सेवा संस्थान की दिव्यांगता ऑपरेशन सेवा के बारे में देखा तो बिना समय गंवाये वो संस्थान में उदयपुर पहुंच गए। डॉ.ओ.पी. माथुर ने जांच करके दांये पांव का ऑपरेशन कर दिया जिससे उन्हें बड़ा फर्क नजर आया। दूसरे पांव के ऑपरेशन के लिए संस्थान में पुनः आए। सफल ऑपरेशन के पश्चात् सोनू पूर्ण–स्वस्थ है। उन्हें भरोसा है कि वह शीघ्र ही पोलियो की दिव्यांगता को मात देकर अपने पैरों पर चलर गांव पहुंचेगा।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

हाँ, लक्ष्मण हाँ, भ्राता राम भगवान, हे ! सीता माता आप कहाँ चले गये ? भरत जी बेसुध हो गये, बेचैन हो गये, व्याकुल हो गये, दुखी हो गये। तुरन्त दौड़े–दौड़े गये कौशल्या माता जी के चरणों में गिर पड़े। माँ ये क्या हो गया ? माँ, माँ मुझे विदित नहीं था ऐसा हो जायेगा। माँ यदि मेरी इसमे सहमति है तो मुझे ब्रह्म हत्या का पाप लगे। जो नरक में सबसे बड़ा पाप मुझे लगे। मुझे घोर नरक में जाना पड़े। कौशल्या जी ने कहा नहीं बेटा नहीं, तेरी कोई सहमति नहीं थी। ये तो कैकयी की बुद्धि भरमा गयी। फिर भी मेरी देवरानी है। तूं राज्य कर। नहीं माँ मैं राज्य नहीं करुंगा। मैं तो राम भगवान को लौटाने जाऊंगा। वशिश्ठ जी ने कहा पिताजी की भी यही आज्ञा है तुम राज्य करो। ना गुरुदेव ना सिर बल जाऊं उचित असमोरा, सेवा धर्म परम् कठोरा। उधर भगवान श्रीराम ने केवट को पुकारा। गंगा पार करवा दो। मरम तुम्हारा मैं जाना, मैं तुम्हारा मरम जान गया। आपने अहल्या जैसी पत्थर की मूर्ति को नारी बना दिया। मेरी ये नाव तो काठ की है, लकड़ी की है तुम्हारे चरण धोऊंगा। तुम्हारे चरणों के जल से अपने पूरखों को पवित्र करुंगा। अपने पितरों को श्रद्धाजंलि दूंगा। अपनी 21 पुरखों के पितरों को राजी करुंगा। फिर राम आपको नाव में चढ़ाऊंगा।

हो बड़ा गंगा जल.....।
.....गंगा जी के पार लेकर
चलो रे भैया।।

सम्पादकीय

अनुमान और अनुभव दो शब्द हैं। इनका अपना–अपना अर्थ है। यों तो स्वतंत्र रूप से इनमें कोई ज्यादा साम्यता नहीं है। किन्तु जीवन के संदर्भ में ये दोनों शब्द अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

अनुमान के लिये कहा जाता है कि यह अनुभव से पूर्व की भावदशा है। इसमें व्यक्ति पूर्व संचित ज्ञान के आधार पर अनुमान लगाकर कुछ निर्धारित करता है। अनुमान में कल्पना पक्ष प्रधान होता है। इसी कारण से अनुमान कभी सही हो जाता है तो कभी गलत।

अनुभव कल्पना नहीं होता है। यह जीवन में सीखी गई बात है। यह स्वयं द्वारा अनुभूत सत्य होता है। जो कल्पना आधारित है वह ज्यादातर गलत हो सकता है पर जो स्वयं के अनुभव से सीखी बात है वह कभी भी गलत नहीं होती। पर अनुभव केवल सही ही नहीं होता वरन् यह आगे का मार्ग भी निर्धारित करता है। इसलिये जो अपने जीवन का उन्नयन चाहते हैं वे अनुमान के स्थान पर अनुभव को प्रधानता देते हैं।

कुछ काव्यमय

अनुमान सदा ही गलत है,
जीवन के संदर्भ में।
अनुभव केवल पनपता
व्यक्ति के मानस गर्भ में।
अनुभव सीढ़ी बन जाता है,
जब वह आने लगता है।
अनुभव के आते ही फिर
अनुमान वहाँ से भगता है।

अपनों से अपनी बात

सेवा की सराहना

हरिद्वार से आगे ऋषिकेश और गंगाजी के उस पार स्वर्गाश्रम –वट वृक्ष के नीचे श्रद्धेय स्वामी जी श्री रामसुख दास जी महाराज के श्री मुख से प्रवचनामृत का रसपान कर रहे थे –हजारों भक्त। "देखो, सबसे सार की बात बता रहा हूँ –सच्चा सार –ध्यान से सुनना –सेवा और सेवा –प्राणिमात्र की सेवा....." एक हाथ खड़ा हुआ– श्री महाराज जी तो शंका पूछने के लिये बार–बार कहते ही रहते है– तुरन्त बोले "हाँ हाँ पूछो ..... "महाराज, मैं तो बीमार रहने लग गई, शरीर काम का रहा नहीं, आप सेवा की कह रहे हैं, परन्तु करें कैसे? मन में तो बहुत आता है लेकिन....." कहते–कहते बुढ़िया माई के चेहरे पर

झलक आये गहरे विवशता व मजबूरी के भाव।

श्री महाराज जी मधुर वाणी में बोले "देखो, आपका शरीर ही बीमार हुआ है–मन नहीं। प्रति क्षण मन से सेवा की भावना फैलाओ चारों तरफ। प्रभु से प्रार्थना करो– हे दीन–बन्धु, वह मगना बहुत बीमार है– बड़ा कष्ट है उसे, प्रभु उसे ठीक कर दो..... हे. प्रभु– हे दीना नाथ.....। इसी प्रकार जहां भी सेवा हो रही है उसकी अनुमोदना करो– उत्साह बढ़ाओ और फैलाती रहो सेवा के अणुओं को चारों तरफ सभी दिशाओं में।" स्थूल से 'सूक्ष्म' ज्यादा प्रभावशाली है और सूक्ष्म से अधिक चमत्कारिक 'कारण'। जिसने "जगत" को जाना है– वही जान पाएगा "जगदीश" को। सूर्य की किरणें अलग से अपना अस्तित्व नहीं रखती, वे प्रकाशित है सूर्य की ही उष्मा से परन्तु किरणों से हम समझ पाते हैं भास्कर को– सविता देवता को।

आइये, जगदीश को जानने के लिये जगत के हर जीव में झाँकने की कोशिश करें ओर बार–बार कहें मन से–अरे मन? जब खम्भे से नृसिंह भगवान प्रकट हो सकते हैं तो यह जो दुःखी है, यह जो बीमार है उसमें भी तो वही जगदीश है.....

– कैलाश 'मानव'

निर्धन मित्र

एक बार एक अमीर व्यक्ति ने अपने मित्रों को भोजन के लिए न्यौता दिया। दूसरे दिन सभी मित्र अमीर व्यक्ति के घर पहुँच गए। भोजन के बाद उस व्यक्ति को ख्याल आया कि उसकी हीरे –जड़ित सोने की अत्यंत मूल्यवान अंगूठी थोड़ी ढीली होने के कारण कहीं गिर गई। सभी मित्रों ने अंगूठी को बहुत ढूँढा, लेकिन उन्हें अंगूठी कहीं नहीं मिली। तभी एक मित्र ने कहा – आप हम सभी की तलाशी ले सकते हैं, एक आदमी के कारण हम सभी जीवन भर आपकी नजर में शक के दायरे में रहेंगे। इस पर सभी मित्र

तलाशी के लिए सहमत हो गए, सिवाय एक निर्धन मित्र के। उसने अपनी तलाशी देने से मना कर दिया। अन्य सभी मित्रों ने उसे बहुत भला–बुरा कहा और उसे अपमानित किया। अमीर आदमी ने बिना किसी की तलाशी लिए, सभी को सहजता से विदा कर दिया।

दूसरे दिन सुबह व्यक्ति ने जब अपने कोट की अंदर वाली जेब में हाथ डाला तो, उसे अपनी खोई हुई अंगूठी मिल गई। वह सीधा अपने निर्धन मित्र के घर पहुँचा और अपने मित्रों द्वारा किए गए अपमान के लिए क्षमा माँगी। साथ ही साथ उसने निर्धन मित्र से उसके तलाशी नहीं देने के कारण के बारे में भी पूछा।

इस पर निर्धन मित्र ने बिस्तर पर लेटे, अपने बीमार पुत्र की तरफ इशारा करते हुए कहा–मैं जब आप के यहाँ आ रहा था, तब इसने मिठाई खाने की जिद की थी। आपके यहाँ खाने में मिठाई दिखी, मैंने स्वयं न खाकर वह मिठाई मेरी जेब में रख ली और अगर तलाशी ली जाती तो अंगूठी की ना सही, पर मिठाई की चोरी अवश्य ही पकड़ ली जाती। इसीलिए अपमान सहना उचित समझा। रात को सब बात बताता तो बेटे का नाम भी आ जाता तथा अपनी परेशानी मैं बताना नहीं चाहता था।

अमीर व्यक्ति को पुनः अपने किए पर पछतावा हुआ और उसने ठान लिया कि उसके बेटे का इलाज करवाकर, वह अपनी भूल का प्रयश्चित करेगा।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

उन दिनों जार्ज फर्नाडीज देश के युवा दिलों की धड़कन थे। समाजवादी विचारधारा के होने के बावजूद उनकी सर्वमान्यता थी और एक गुस्सैल तथा समर्पित राजनेता के रूप में उनकी प्रसिद्धि थी। वे देश भर के रेलकर्मियों की यूनियन के अध्यक्ष थे। उनकी एक आवाज पर पूरे देश की रेलों के चक्के जाम हो जाते थे। उन्होंने कांग्रेस के सर्व शक्तिमान नेता एस.के.पाटिल को लोकसभा चुनाव में बुरी तरह हराया था। तभी से उन्हें जार्ज दी जायन्ट किलर कहा जाने लगा था। जार्ज जब भीलवाड़ा आये तब उनके साथ एक अन्य प्रसिद्ध समाजवादी मधु लिमये भी थे। कैलाश के युवा मन पर इन हस्तियों के व्यक्तित्व का गहरा असर पड़ा।

कैलाश की पुस्तकों की दुकान अच्छी चल निकली थी। उत्साह में वह सुबह 4 बजे ही दुकान खोल देता था। रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड पास ही थे इस कारण आने–जाने वाले यात्रियों से अच्छी बिक्री हो जाती थी। उन दिनों हिन्द पाकेट बुक्स का प्रकाशन शुरू ही हुआ था। कम कीमत में अच्छी–अच्छी पुस्तकें मिल जाती थी जिससे लोगों का पुस्तकों के प्रति रूझान भी बढ़ गया था। कैलाश को स्वयं भी पुस्तकें पढने का बहुत शौक था। क्रान्तिकारी लेखकों की पुस्तकें उसे बहुत पसन्द थी।मन्मथनाथ गुप्त उसके प्रिय लेखक थे।

ये पुस्तकें पढ़ उसमें जोश भर जाता था। बाबू देवकीनन्दन खत्री की चन्द्रकान्ता संतति की भी सभी पुस्तकें उसने कई कई बार पढ ली थी।

पाठ्य पुस्तक मंडल की पुस्तकों की बिक्री अच्छी होती थी मगर उन पर कमीशन बहुत कम मिलता था इसलिये उनसे ज्यादा कमाई नहीं होती थी। कमाई के लिये सभी पुस्तक विक्रेता कुंजियां बेचते थे। सब कुंजियों के साथ ग्राहकों को व्याकरण, एटलस आदि खरीदने को बाध्य करते। कैलाश ऐसा नहीं करता तो ग्राहक अन्य दुकानें छोड़ उसके ही पास आते। इस पर सभी व्यापारी उससे लड़ने आते मगर कैलाश अपनी बात पर अडिग रहता।

अंश - 016

संकल्प में है शक्ति

गुरु के साथ उनके कुछ शिष्य चले आ रहे थे। रास्ते में एक बड़ी चट्टान दिखीं एक शिष्य ने गुरु से पूछा, 'गुरुदेव! यह चटट्ान बड़ी ताकतवर है क्या इससे भी ज्यादा ताकतवर कोई चीज है?' गुरु कुछ बोले, इससे पहले ही दूसरा शिष्य बोला, 'चटट्ान से भी ताकतवार है लोहा, जो इस चटट्ान को भी तोड़ने का सामर्थ्य रखता है।' तो दूसरे शिष्य ने पूछा, गुरुदेव, क्या लोहे से भी ज्यादा ताकतवर कोई चीज है?' किसी ने अग्नि बताया तो किसी ने पानी। तभी अगले शिष्य ने कहा, 'मुझे तो पानी से भी ज्यादा प्रभावशाली दिखाई पड़ती है– हवा, जो पानी को भी उड़ा ले जाती है।'

इसी बीच गुरु बोले, 'सुनों! सबसे ज्यादा ताकतवर यदि कुछ है तो वह है मनुष्य के मन का संकल्प। मनुष्य अपने संकल्प के बल पर पाषाण को तोड़ सकता है, लोहे को गला सकता है, आग को बुझा सकता है, पानी को उड़ा सकता है।' सब कुछ मनुष्य के संकल्प पर निर्भर है। मनुष्य का संकल्प यदि दृढ़ है तो बुरे–से–बुरे संस्कारों को जीत सकता है।

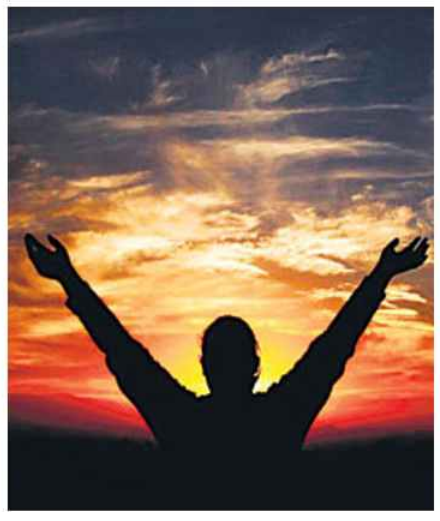

यूनानी चिकित्सा व स्वास्थ्य

यूनानी चिकित्सा पद्धति में मिजाज (प्रकृति) बहुत मायने रखती है। इसमें व्यक्ति से लेकर रोग तक की प्रकृति पर ध्यान दिया जाता है। यूनानी में बताए छह सिद्धांत अपनाकर जीवनशैली व इम्युनिटी बेहतर की जा सकती हैं–

हवा–ए–मुहीत – (आसपास की आबोहवा) शुद्ध हवा व बेहतर पर्यावरण सबसे जरूरी है। अतः अपने आसपास शुद्ध हवा रहे और क्षेत्र प्रदूषण से मुक्त रहे। तभी बेहतर ऊर्जा मिल पाएगी।

माकूल–व–मशरूब –(खाने–पीने की चीजें) इस पद्धति में प्रकृति के अनुरूप खाने–पीने की चीजों को निर्धारित किया गया है। यदि व्यक्ति इसके अनुसार चलता है तो स्वस्थ रहता है।

हरकत व सुकून बदनी – (शारीरिक कार्य व आराम) जितना काम करें, उसी की तुलना में शरीर को आराम भी दिया जाना जरूरी हे। शरीर की क्षमता के अनुसार काम व आराम मिलें।

हरकत व सुकून नफसानी –(मानसिक सक्रियता व आराम) इसके अनुसार भी आराम जरूरी है। मानसिक थकान पर थोड़ी देर के आराम जरूर करें।

नोम व यकजा–(सोना व जागना) शारीरिक व मानसिक रिकवरी के लिए सही समय एवं सही मात्रा में नींद लेना अनिवार्य (6 से 8 घंटे) है।

एहतिबास व इस्तेफ्राग –आवश्यक चीजें शरीर में रूकना व खराब चीजें बाहर निकलना जरूरी है। यदि इन दोनों में संतुलन रखकर व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है।

यूनानी से जुड़े कुछ खास नुस्खे –

शहद के एंटी–बैक्टीरियल गुण खांसी से जल्द राहत दिलाते हैं। रात को सोने से पहले 1 चम्मच शहद लें। आधा चम्मच शहद में थोड़ी इलायची और नींबू का रस डालकर दिन में 3 बार लें।

अदरक के टुकड़े शहद के साथ मिलाकर खाने से खांसी में तुरंत राहत मिलती है। अदरक का जूस निकालकर शहद की कुछ बूंदे मिलाकर लें।

हल्दी का एंटी –बैक्टीरियल व एंटी वायरलगुण व दूध लेने से भी खांसी में आराम मिलता है। दूध फीका ही लें।

मुलेठी (थोड़ी सी) चूसने से गले की खराश एवं खांसी में लाभ होता है। साथ ही फेफड़ों से बलगम निकलता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

अनुभव अमृतम्

आज मैंने ध्यान में बार–बार अपने को तट पर स्थित किया और जब मैं समुद्र की लहरें कई घंटों तक देखा करता था, रूक जाता। बीच में लहरें, एक आयी एक गयी, लहरों की हर एक पुरानी बूँद समाप्त हो रही है और समाप्त होते ही नई बूंद जन्म ले रही है। आज जब तटस्थभाव से अपने आप को अवस्थित किया तट पर और सामने समुद्र की लहरें अपने देह देवालय को छू रही हैं। ये देह देवालय कोई भी अंग का एक हिस्सा भी ऐसा नहीं, जहाँ लहरें नहीं चल रही हो, जहाँ जन्म और मरण नहीं हो रहा हो।

सिर के बाल से लेकर के पैर के अगूठे के नख तक बार–बार अपने को तटस्थ करता। कैलाश देख, खो मत इसमें। देखा हेल्थ वण्डर वर्ल्ड को। उन क्षणों को याद किया, जब मन में प्रेरणा दी, भगवान ने एक हेल्थ वण्डर वर्ल्ड बनाया जायेगा। नाम से क्या फर्क पड़ता? वण्डर वर्ल्ड नहीं होता तो आश्चर्य लोक हो जाता, देह देवालय हो जाता। एक दिन रात को भगवान ने उठा दिया, उन्हीं शक्ति ने उठा दिया, जिन्होंने हैदराबाद में पहली बार मैंने जगदीश आर्य साहब, पहली बार मैंने पूर्ण तटस्थ होते देखा। हैदराबाद में कमरे पर मैंने पूर्ण तटस्थ होते देखा। अभी के समय और कुछ काल गणना का समय क्या कहें? मूक दर्शक आज जब हेल्थ वण्डर वर्ल्ड का विचार आया, रात को दो बजे सेवामहातीर्थ लोयरा ग्राम का एक क्षेत्र, रास्ते से फोन कर दिया, भंवर जी दौड़ो, पाँच सात बच्चे दौड़कर आ गये। रस्सी लेना, चूने का एक डब्बा लेना, कुछ ईंटें लेना, ईंटें रख देना, कुछ खुदाई का यंत्र रख देना। यहाँ हृदय आयेगा 20 फिट ऊँचा, 20 फिट चौड़ा। पास का भौगोलिक क्षेत्र करीबन 500 वर्ग फिट, यहाँ हृदय, यहाँ पैर, लगभग 80 फिट लम्बा, हाथ 40 फिट लम्बे, किडनी, हार्ट, स्टॉमक, लीवर और कर कमलों के ऊपर एक कलश और चंडीगढ़ से भी बनवाये।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 369 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023